श्री आई माताजी के परम भक्त चमत्कारी

# दिवान श्री रोहिताश्वजी

# व जती श्री भगा बाबाजी

स्व. श्री नारायणराम जी लेरचा

बडेर, बिलाडा

श्री आई माताजी के परम भक्त चमत्कारी

# दिवान श्री रोहिताश्वजी

प्राप्ति स्थान :

१. बडेर, बिलाड़ा (राज०)

२. राम इलेक्ट्रिक स्टोर्स, सिरणवा रोड, बिलाड़ा

●

मुद्रक :

सज्जन प्रिन्टिंग प्रेस

त्रिपोलिया बाजार,

जोधपुर (राज०)

☎ 22970

●

प्रथमावृति

1000

वि. सं. २०४०

●

मूल्य :

१)५० रुपया

●



# "दो शब्द"

प्रस्तुत पुस्तक में मैंने बडेर बिलाड़ा की पुरानी बहियों व बुजुर्गों से दंत कथाओं के आधार पर संकलन कर दिवान रोहिताश्वजी व जती भगा बाबाजी की जीवनी लिखी है। ये दोनों महापुरुष श्री आई माताजी के परम भक्त थे व आई माताजी की इतनी कठोर तपस्या की थी कि श्री आई माता ने प्रत्यक्ष दर्शन देकर इन्हें वरदान दिया था। आई पंथ के डोरा बंद इन दोनों महापुरुषों को आज भी देव तुल्य मानकर पूजा करते हैं। विवाह के अवसर पर इनके जात देते हैं और अपने बालकों का झड़ोला उतारते हैं। आज भी इन महापुरुषों का परचा है। जो भक्त श्रद्धा से इनकी आराधना करता है, उसकी मनोकामना अवश्य पूर्ण होती है। जती भगा बाबाजी ने डोराबन्द समाज के उत्थान के लिये बहुत प्रयत्न किया था और आप वचन सिद्ध पुरुष भी थे।

मैंने दिवान रोहिताश्वजी व जती भगा बाबाजी की जीवनी लिखने में अपनी ओर से बहुत सतर्कता बरती है, इसके बावजूद भी यदि कहीं त्रुटि रह गई हों तो मैं विद्वान पाठकों से निवेदन करता हूं कि उन त्रुटियों से मुझे अवगत करावें। मैं हृदय से उनका आभारी रहूंगा।

विनीत :

नारायणराम लेरचा

बडेर, बिलाड़ा

## - समर्पण -

वर्तमान जतीजी श्री मोती बाबाजी
बडेर, बिलाड़ा
को सप्रेम सादर समर्पित

—नारायणराम लेरचा

# "दिवान श्री रोहिताश्वजी"

दिवान रोहिताश्वजी का जन्म संवत् १६२६ के पोह शुक्ला ५ को हुआ था। आप दिवान करमसिंहजी के पुत्र थे। दिवान करमसिंहजी ग्राम धांगड़वास में मुगलों के साथ युद्ध करते हुए वीर गति को प्राप्त हुवे थे। उस समय रोहिताश्वजी अपने पिता के साथ उसी युद्ध के मैदान में थे। उस समय आप मात्र ११ वर्ष के थे। जब दिवान करमसिंहजी का स्वर्गवास हो गया तब मुगल रोहिताश्वजी को भी मारना चाहते थे। लेकिन उनके भाई छोहजी जो उस रण क्षेत्र में थे, उन्हें मुगलों की नियत का पता चला। इस पर छोहजी ने अपनी बुद्धिमानी व चातुर्य से रोहिताश्वजी को गुप्त रूप से रणक्षेत्र से बाहर निकाला। और उन्हें ग्राम सतलाना में लाकर एक विधवा सुनारी को सारी बातें बता कर लालन पालन हेतु सौंप दिया।

सतलाना में रोहिताश्वजी उस विधवा सुनारी के यहां रहने लगे। दिन में गांव के अन्य बालकों के साथ जंगल में गायों के बछड़ों को चराने जाया करते थे। जंगल में अन्य बच्चों के साथ हमेशा राज दरबार का खेल खेलते। आप तो राजा बन कर एक टीले पर बैठ जाते व अन्य बालक अपनी शिकायतें लेकर जाते व रोहिताश्वजी उनका निपटारा करते। रोहिताश्वजी तो राज बीज थे। उनमें तो संस्कार ही राज घराने के थे। अतः वे राज दरबार का खेल खेलते खेलते जब दिन में सो जाते तब एक काला नाग फन फैलाकर उनके मुंह पर छाया कर देता था। यह अलौकिक लीला हमेशा होती रहती थी। एक दिन ग्राम धूंधाड़ा का एक बूढ़ा राजपूत उधर से गुजर रहा था। उस समय नाग फन फैलाये रोहिताश्वजी के मुंह पर छाया किये बैठा था। जब उस राजपूत

ने यह लीला देखी, तो सोचा कि हो न हो यह कोई राज बीज है, अवश्य ही छत्रपति होगा। राजपूत ने पास में खेलते बालकों से पूछा कि यह बालक किसका है। तब बालकों ने बताया कि अमुक सुनारी का पुत्र है। वह राजपूत उन बालकों को साथ लेकर सीधे उस विधवा सुनारी के घर पहुंचे। जाकर उन्होंने सारा वृतान्त मालूम किया। और उसी समय जोधपुर जाकर महाराजा को सारा वृतान्त कह सुनाया। महाराजा ने उस राजपूत को साथ लिया और सतलाना गये। वहां जाकर सुनारी से पूरी जानकारी प्राप्त की और रोहिताश्वजी को अपने साथ लाकर बिलाड़े की दिवान की गद्दी पर बैठाया। रोहिताश्वजी संवत् १६३७ के माघ शुक्ला ५ को दिवान की गद्दी पर विराजमान हुवे थे।

दिवान की गद्दी पर बैठते ही रोहिताश्वजी आई माता की भक्ति में इतने तल्लीन हुवे कि यह निश्चय कर लिया कि जब तक आई माता मुझे प्रत्यक्ष रूप में दर्शन नहीं देंगे तब तक कठोर तपस्या करता रहूंगा। यह निश्चय कर आई माता के मंदिर में छत से एक सांकल टांग कर उस सांकल में अपनी चोटी को बांध कर एक पांव पर खड़े रह कर वर्ष तक छै कठोर तपस्या की। इसी बीच जो लोग आई माता के दर्शन करने आते वे रोहिताश्वजी के चरण स्पर्श करते। दिन रात दर्शनार्थियों का मेला लगा रहता था। रोहिताश्वजी के पांवों में सोजन आ गया था। इस कठोर तपस्या से भी आई माता प्रसन्न नहीं हुवे तो रोहिताश्वजी ने भूमि के नीचे गुफा बनाकर एकान्त में धुनी बनाकर कठोर तप किया। लगातार बारह वर्ष की कठोर तपस्या से आई माता प्रसन्न होकर प्रत्यक्ष दर्शन देकर रोहिताश्वजी को वरदान दिया कि "मैं तेरी तपस्या व भक्ति से अति प्रसन्न हूं। मैं हर दम तेरी



पूठ पीछे हाजर रहूंगी" इतना वरदान दे आई माता अलोप हुवे। रोहिताश्वजी ने छत से लटकी सांकल में चोटी बांधकर तपस्या की थी वो सांकल आज तक लोगों के दर्शनार्थ आई माता के मंदिर में लटकी हुई है तथा भूमि के नीचे गुफा में उनकी धुनी आज तक विद्यमान है।

जब रोहिताश्वजी की तपस्या करते समय लोगों की भीड़ उनके दर्शन करने उमड़ती थी तब रोहिताश्वजी ने सोचा कि इस भीड़ से मेरी तपस्या में खलल पड़ता है। किसी शान्त व एकान्त स्थान में जाकर भक्ति करनी चाहिये। ऐसा सोचकर आप एक दिन बिलाड़ा ग्राम के पूर्व दिशा में बिलाड़ा से ६–७ किलो-मीटर दूर घना झाड़ी वाला स्थान जिसे "भट्टा" कहते हैं वहां जाकर तपस्या करने लगे। यह निर्जन स्थान बड़ा शान्त था। आस-पास घनी झाड़ियां थी। उस स्थान पर आज भी रोहिताश्वजी की छतरी में मंदिर बना हुआ है जो रनिया नामक बेरे पर है। शुक्ल पक्ष की बीज को डोरा बन्द रोहिताश्वजी के दर्शन करने जाते हैं तथा वर्ष की चारों बड़ी बीजों को अच्छा मेला रहता है। रात भर जागरण होता है। भक्त लोग शुद्ध रोटी का कांसा करते हैं। नारियल चढ़ाते हैं तथा डोराबन्दों के विवाह के अवसर पर वहां जात लगती है व अपने बच्चों के झड़ोले उतारते हैं। आज भी रोहिताश्वजी का परचा है। कई डोराबन्द जिनके सन्तान नहीं थी, रोहिताश्वजी की मनोति मानने से सन्तान पैदा हुई है। हजारों लोगों के विभिन्न प्रकार के दुःख दूर हुवे हैं।

एक समय उसी रनिया बेरा पर रात के समय पांच चोर चोरी करने आये। जब वे चोर बेरे की पोल में घुसे उस समय

रोहिताश्वजी के चमत्कार से पांचों चोर अन्धे हो गये। उन्हें आगे कुछ भी सुझाई नहीं दिया। उसी समय चोरों ने रोहिताश्वजी के पांवों में गिरकर माफी मांगी व भविष्य में चोरी न करने की शपथ ली। इस पर रोहिताश्वजी की कृपा से पुनः ठीक हुवे और अपने घर गये।

रनिया बेरा जहां रोहिताश्वजी का थान है। उस बेरे की पोल में कोई भी सवारी पर जैसे ऊंट, घोड़ा पर बैठ कर नहीं जा सकता है। एक बार एक आदमी ने लोगों से कहा कि फालतू की अन्ध विश्वास की बातें करते हो। मैं घोड़े पर बैठ कर पोल के अन्दर जाता हूं, देखें क्या होता है। वह आदमी जब जिद करके घोड़े पर बैठ कर पोल में पहुंचा। उसी समय चमत्कार हुआ। वो उछल कर धड़ाम से घोड़े से नीचे आ गिरा और बेहोश हो गया। घोड़ा उसी क्षण वहां से भाग गया। मूर्छा टूटने पर रोहिताश्वजी के पांवों में गिर कर क्षमा याचना की। आज भी वैसा ही परचा है।

जब रोहिताश्वजी ने १२ वर्ष तक कठोर भक्ति की और आई माता ने प्रत्यक्ष दर्शन देकर वरदान दिया तब रोहिताश्वजी आई पंथ के अनुयाईयों को सुमार्ग बताने हेतु गांव-गांव फिरने लगे और कई लोगों के दुःख दूर किये व हजारों लोगों को डोरा बन्द बनाया। लोग रोहिताश्वजी को आई माता के रूप में पूजते थे। रोहिताश्वजी घूमते २ ग्राम धांगड़वास जहां अपने पिता करमसिहजी युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुवे थे। वहां उनकी स्मृति में छतरी बनाई गई थी। वहां अपने पिता की छतरी पर दर्शन करने पधारे। धांगड़वास अपने पिता की समाधि के दर्शन कर आगे अपने बचपन में लालन पालन करने वाली विधवा सुनारी के घर ग्राम सतलाना पधारे।



जिस दिन सतलाना पधारे उस दिन गांव के लोगों ने रोहिताश्वजी का खूब स्वागत किया और रोहिताश्वजी भी अपने पालन पोषण करने वाली सुनारी के पांव छुअे। और उस दिन वहीं रूके। रात के समय जैसलमेर के भाटियों का एक दल सतलाना पर डाका डालने आया। जब यह बात रोहिताश्वजी को ज्ञात हुई तो आपने उन भाटियों को ललकारा। आपस में मुठ-भेड़ हुई। भाटी हार कर भागने लगे। रोहिताश्वजी ने भागते हुवे भाटियों का पीछा किया और जाकर ग्राम कालीजाल (जो जोधपुर से करीब 35 कि.मी. है) में भाटियों को जा पकड़ा। भाटियों ने रोहिताश्वजी के सामने आत्म समर्पण कर दिया। और रोहिताश्वजी को अपना धर्म गुरु मानकर आई पंथ के डोरा बन्द बन गये। उनके पास जितना सोना, चांदी, नकद रुपये थे वो सब रोहिताश्वजी को भेंट कर दिया। इस पर भाटियों को छोड़ दिया और आप पुनः सतलाना पधारे। सतलाना उस समय अलग-अलग सात ढाणियों में बसा हुआ था। रोहिताश्वजी ने सातों ढाणियों के लोगों को इकट्ठा किया और सातों ढाणियों को शामिल कर एक गांव बसाया। तथा गांव में आई माता का मंदिर स्थापित किया व अखंड जोत जलाई। जिसकी लो पर केशर पड़ा। अखंड जोत आज दिन तक जल रही है और उसकी लो पर केशर पड़ता है। लो के उपर किसी धातु का चदरा लगा हुआ नहीं है। खाली पत्थर पर लो से केशर पड़ता है।

ग्राम सतलाना बसाकर रोहिताश्वजी पुनः बिलाड़ा पधारे। जिस समय बिलाड़े पधारे थे उस समय किसी चुगलखोर दुश्मन ने जोधपुर जाकर महाराजा उदेसिंहजी को शिकायत की कि बिलाड़े का दिवान रोहिताश्वजी एक ईन्द्रजाली आदमी है। और धर्म के नाम पर पूरे मारवाड़ में घूम-घूम कर भोली भाली जनता

को बहला फुसला कर धन लूटता है। वो जनता से लिया हुआ बहुत सा सोना, चांदी व नगद लेकर बिलाड़ा आया है।

जनता को धर्म के नाम पर लूटने की बात पर जोधपुर के महाराजा उदेसिंहजी को गुस्सा आया और तुरन्त एक घुड़सवार को बिलाड़ा रोहिताश्वजी को बुलवाने हेतु भेजा। घुडसवार बिलाड़ा आकर रोहिताश्वजी को महाराजा का संदेश कहा। महाराजा की आज्ञा सुन रोहिताश्वजी तुरन्त उस घुड़सवार के साथ जोधपुर के लिये रवाना हुवे। जोधपुर पहुँच कर महाराजा के सामने उपस्थित हुवे। महाराजा उदेसिंहजी ने रोहिताश्वजी को पूछा कि तुम धर्म के नाम पर लोगों से काफी रुपये लूटते हैं। यह कहां तक सत्य है। तुम्हारे अन्दर ऐसा क्या चमत्कार है। मुझे भी अपना चमत्कार बताओ। महाराजा की बात सुन रोहिताश्वजी ने निवेदन किया कि न तो मैं धर्म के नाम पर किसी को लूटता हूं। और न ही मेरे पास चमत्कार है। चमत्कार तो आई माता का है। इस पर महाराजा ने अपने मंत्री को आदेश दिया कि तुरन्त रोहिताश्वजी को लेजाकर जेल में बन्द कर दो। मंत्री ने महाराजा की आज्ञानुसार रोहिताश्वजी को जेल में बन्द कर दिया। थोड़ी देर बाद जेलों के ताले अपने आप खुल गये। यह खबर जब महाराजा के पास पहुँची तो उन्होंने आज्ञा दी कि शहर से लोहारों को बुलाकर रोहिताश्वजी के पांवों में बेड़ियां डाल दी जाय, मंत्री ने लोहारों को बुलवाया और बेड़ियां बनाने का हुक्म दिया। हुक्म पा लोहार बेड़ियां बनाने लगे। जिस समय बेड़ी रोहिताश्वजी के पांवों में डाली जाने लगी उस समय आई माता के चमत्कार से रोहिताश्वजी के पांव हाथी के पांव के समान हो गया। जब लोहारों ने बड़ी बेड़ियां बनाई तो पांव बिलकुल पतला हो गया। यह रचना देख लोहार घबराये और



रोहिताश्वजी के पांवों में अपना शीश नंवाया। तथा आई माता के डोरा बन्द बन गये। जब से ही जोधपुर के लोहार आई पंथ के अनुयाई हैं। तथा उन्होंने अपने मौहल्ले में आई माता का मंदिर स्थापित किया। यह बात जब महाराजा को ज्ञात हुई तो महाराजा ने सोचा जरूर रोहिताश्वजी करामाती हैं। ऐसा सोच कर महाराजा ने रोहिताश्वजी को अपना धर्म गुरु माना और कहा मैंने आपको नाहक लोगों के कहने से कष्ट दिया। अब आपको जिस चीज की व सुविधा की जरूरत हो निःसंकोच मुझसे कहिये। रोहिताश्वजी ने कुछ नहीं मांगा लेकिन महाराजा के अधिक कहने पर आपने अपनी गायों के चरने हेतु जोड व पानी पीने हेतु एक बेरा मांगा। उसी समय महाराजा ने बिलाड़ा में रोहिताश्वजी को अपने जोड का आधा जोड व पीपलिया बेरा दे दिया।

पायो अरट पिपलियो, आधो पायो जोड।
करे अवर ऐती कमण, रोहितास री होड।।

जिस समय रोहिताश्वजी को महाराजा ने जोधपुर बुलवाया था। उस समय बिलाड़ा के डोराबन्द भक्तों ने बहुत रोष प्रकट किया। तथा अपने स्वामी की बेइज्जती सुन बडेर के सामने इकट्ठे होकर आपस में कट २ कर शहीद होने लगे। जब यह बात बिलाड़ा के हाकिम को ज्ञात हुई तो वह दौड़ा २ बडेर की पोल आया और सब डोराबन्दों को रोहिताश्वजी व आई माता की सौगन्ध दिलाकर शांत किया। और कहा मैं अभी जोधपुर से रोहिताश्वजी को बुलवाता हूं। हाकिम ने उसी समय महाराजा को पत्र लिखा कि बडेर के सामने पांच सौ डोरा भक्त तो शहीद हो गये हैं। आप रोहिताश्वजी को शिघ्र बिलाड़े भेजिये। अन्यथा मारवाड़ के समस्त किसान शहीद हो जायेंगे। हाकिम के आने

तक यहां पांच सौ भक्त शहीद हो चुके थे। जिनको बडैर चौक में ही जहां आजकल सीरवी समाज का भवन बना हुआ है। उसके नीचे दफनाया गया था।

जब महाराजा को हाकिम का पत्र मिला तो शिघ्र ही रोहिताश्वजी को बिलाड़ा रवाना किया। रोहिताश्वजी जोधपुर से बिलाड़ा पधारे उस समय लोगों ने बहुत खुशी जाहिर की। धूम-धाम से रोहिताश्वजी को बधाया। उन दिनों जोधपुर महाराजा के कामदार बिलाड़ा में भानजी भंडारी थे। जब महाराजा साहब का हुक्म जोड व पीपलिया बेरा देने का बताया तो भानजी ने उसमें आड लगाई और कहा कि जोड के दो हिस्से कैसे होंगे। भानजी की बात सुन रोहिताश्वजी ने कहा देखो भानजी मैं अपने घोड़े पर बैठकर दरबार के जोड के बीचो बीच से गुजरूंगा। जिस डंडी पर मेरा घोड़ा निकलेगा वहां पर कभी घास नहीं उगेगी। यह मेरे जोड व महाराजा के जोड की हद बन्दी होगी। महाराजा के जोड में सफेद घास व मेरे जोड में लाल घास उगेगा। मेरे घास पर सिट्टा नहीं आयेगा और महाराजा के घास पर सिट्टा आयेगा। यह कह कर जोड के बीचो बीच से रोहिताश्वजी अपने घोड़े पर बैठकर निकले। जिस जगह से घोड़ा गुजरा था, उस जगह आज तक घास नहीं उगता है। तथा जिस स्थान पर अपना घोड़ा रोका था, वहां पर रोहिताश्वजी का थान स्थापित किया गया। जो आज दिन मौजूद है। आज दिवान साहब के जोड में लाल व बिना सिट्टे का घास उगता है। और महाराजा के घास पर सिट्टा आता है और घास सफेद रंग का उगता है।



रोहिताश्वजी आई माता के अनन्त भक्त थे। आई माता की कृपा से वचन सिद्ध भी थे। रोहिताश्वजी ने आई पंथ का खूब विस्तार किया और हजारों लोगों को डोराबंद बनाया था। जिसमें सर्व जाति के लोग थे। रोहिताश्वजी कहा करते थे कि परिवार में रहकर हम तपस्या नहीं कर सकते लेकिन हमें सुबह शाम आई माता का ध्यान लगाना चाहिये। सन्ध्या समय घर में आई माता के स्थान पर घी का दीपक जरुर करें। हर माह की उजाली बीज का वृत जरुर रखें तथा हर बीज को आई माता के मन्दिर जाकर कांसा करे व करणां मूठ पूरे।

रोहिताश्वजी एक सिद्ध पुरुष हो गये थे। आपके सात रानियां थी तथा दस पुत्र थे। (१) लिखमीदासजी (२) कनोजी (३) पीथोजी (४) चांदोजी (५) दूदाजी (६) देवराजजी (७) भारमलजी (८) अमराजी (९) खेतसिंहजी (१०) विजेराजजी। ये दसों ही पुत्र आई माता के परम भक्त थे। आई माता की भक्ति करते हुवे रोहिताश्वजी का संवत् १६९४ के पोष सुद ४ को स्वर्गवास हुआ। आपके स्वर्गवास पर ६ रानियां सती हुई थी।

# "जती भगा बाबाजी"

राजस्थान के पाली जिले में सोजत तहसील के बगड़ी ग्राम में सीरवी जाति के पंवार गोत्र में एक आई माता के भक्त निवास करते थे। घर में गायों, भेंसों का ठाट-बाट था। खेती भी अच्छी थी। पैदावार खूब होती। पूर्ण साधन सम्पन्न गवाड़ी थी। लेकिन एक बात की कमी थी कि उनके कोई संतान नहीं थी। यों तो संतान पैदा होती लेकिन बाल्यकाल में मृत्यु के मुंह में चले जाते। जिससे वे पति-पत्नि अत्यन्त दुखी रहा करते थे। वे हमेशा यही सोचते कि हमारे मरने के बाद हमारी इस सम्पति का रखवाला कौन होगा। तथा मेरा वंश भी नष्ट हो जायेगा। मेरे वंश का नाम आगे कैसे चलेगा। यह सोच हरदम दुखी रहते थे। दोनों पति-पत्नि आई माता की खूब भक्ति करते व संतान प्राप्ति की आराधना करते। अपने आंगन में तीन-चार बार दुर्गा पाठ भी करवाया। हवन भी करवाये। कई देवी-देवताओं की आराधना करते थे। संतान प्राप्ति हेतु दोनों कई तीर्थ भी गये।

इसी प्रकार एक बार दोनों पति-पत्नि तीर्थ यात्रा में काशी, हरिद्वार गये। वहाँ पर उन्हें एक महात्मा के दर्शन हुवे, उन्होंने महात्मा के चरण स्पर्श किये और अपनी आत्मा का दुख निवेदन किया। उन महात्मा ने दोनों पति-पत्नि को आशिर्वाद दिया कि तुम अपने इष्ट देव को याद करो, अवश्य तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी। महात्मा का आशिर्वाद ले दोनों पुनः अपने गांव बगड़ी आये। यहां आकर अपनी इष्ट देवी आई माता की तन-मन से आराधना करने लग गये। रोज सुबह-शाम आई माता के मन्दिर में जाते और घण्टों वहां आई माता के सामने बैठ स्तुति करते।



दोनों पति-पत्नि की इतनी अटूट श्रद्धा से आई माता उन पर प्रसन्न हुवे और भादरवा सुद बीज की रात को दोनों को एक साथ स्वपन में दर्शन देकर वरदान दिया कि मैं तुम्हारी भक्ति से अति प्रसन्न हूं और अब तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी। दशवें मास तुम्हारे एक पुत्र पैदा होगा जो अपना नाम दुनियां में रोशन करेगा व मेरा अनन्य भक्त होगा। इतना वरदान दे आई माता अलोप हुवे। प्रातःकाल जब दोनों पति-पत्नि ने अपने स्वपन की बात कही तो दोनों को बहुत आश्चर्य हुआ। क्योंकि दोनों को एक साथ एक ही प्रकार से स्वपन में आई माता ने दर्शन देकर वरदान दिया था।

दोनों आई माता की कृपा से अति प्रसन्न हुवे और आई माता की स्तुति में लग गये। दिन निकलते गये, पत्नि गर्भवती हुई। आई माता के दिये वरदान के अनुसार ठीक दशवें मास उनके पुत्र उत्पन्न हुआ। दोनों मन में फूले नहीं समाये। अपने पुत्र का नाम उन्होंने भगा रखा। भगा बचपन से ही आई माता की भक्ति करने लगे थे। जब भगाजी कुछ बड़े हुवे तो उनके माता पिता उन्हें बिलाड़ा बडेर में लाकर आई माता की सेवा में सुपुर्द कर दिया। इस प्रकार सुपुर्द किये हुवे बालक आई माता की सेवा करते हैं। और आई माता की भेल (रथ) के साथ गांव गांव घूम कर आई पंथ का प्रचार करते हैं। जिन्हे डांगरिया बाबा कहते हैं। ये आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं। इसी प्रकार भगाजी भी आई माता के डांगरियां बाबा बना दिये गये। भगा बाबाजी आई माता के परम भक्त थे। लोगों को आई पंथ के उपदेश देते व गांव गांव घूमकर आई पंथ का महत्व लोगों को समझाते थे। भगाजी की बुद्धि व योग्यता को देख उन्हें जती का पद प्रदान किया गया। अब जती भगा बाबाजी गांव गांव भेल के साथ घूमते व डोराबन्दों को उपदेश देते थे। जती भगा बाबाजी वचन सिद्ध पुरूष थे। तथा आपने आई माता के कई भजन-वचन—साखियां

लिखी थी। जिन्हें खुद भगा बाबाजी बड़े प्रेम से गा-गा कर लोगों को सुनाते थे। आज भी उनके द्वारा रचित भजन आई पंथी बड़े प्रेम से गाते हैं।

जती भगा बाबाजी आई पंथ के प्रचार हेतु समस्त मारवाड़, मीमाड़, मालवा का दौरा करते रहते थे। एक बार आपने मध्य प्रदेश में नर्बदा नदी के किनारे डोराबन्दों का सम्मेलन बुलाया। उस सम्मेलन में जती भगा बाबाजी ने डोराबन्दों को आई पंथ के नियमों से अवगत कराया व समाज सुधार हेतु लोगों को सुमार्ग बताया। आपने आई पंथ के प्रचार हेतु तथा सीरवी जाति में फैली कुरीतियों को मिटाने का भरसक प्रयत्न किया था। जति भगा बाबाजी डोराबन्दों के पूजनीय धार्मिक गुरु थे। लोग बड़ी श्रद्धा से आपकी बताई बातें मानते थे।

जती भगा बाबाजी को नशीली वस्तुएं जैसे शराब, अफीम, भांग, गांजा, बीड़ी आदि से बहुत नफरत थी। आप हमेशा लोगों को नशीली वस्तुओं से दूर रहने की बात कहते थे। कई लोगों ने जती भगा बाबाजी की बात को ग्रहण किया और नशीली वस्तुओं के सेवन नहीं करने की सोगन्ध खाई जिसका एक प्रमाण निम्न है।

लिखत १ सीरवी सांमा जाति प्रमारू बास बिलाड़ा वाला जती भगाजी ने कर दीनौ। तथा म्हूं दारू, मांस मद माटी तमाखू खाऊं-पीऊं सुंघूं तो श्री माताजी रो गुनेहगार हूं। श्री माताजी सूं बेमुख होऊं। ने बडेर में पेटियो रिजक पाऊं नहीं। औ लिखत सांमा प्रमार हेमा रा बेटा राजी-बाजी हुय ने कर दीनों छै। गांव देवरिया रा बडेर में कर दीनों छै। दा. बोहरा हिमता रा छै। लिखत रा आखर बंचाय दीना छै। और राड सुरी तथा खोटा मारग चालूं तथा चोरी जारी करूं तो श्री माताजी रो गुनेहगार होऊं। संवत १९०२ रा चेत वद ७।



जती भगा बाबाजी बड़े वीर, साहसी, स्वतन्त्रता प्रिय और आई माताजी के परम भक्त थे। अभिमान तो उनमें नाम मात्र का भी नहीं था। मनुष्य मात्र को वे बराबर समझते थे। ऊंच-नीच का भेदभाव उनके निकट भूल कर भी नहीं आता था। आप हर जाति जैसे आई माता के डोराबन्द मेगवाल, मोची, सालवी, छीबी आदि के घरों में बिना भेदभाव के जाते व उन्हें आई पंथ के उपदेश देते थे।

एक बार जती भगा बाबाजी आई माता की भेल के साथ ग्राम सथलाणा में गये। ग्राम सथलाणा में रात के समय भगा बाबाजी ने उन लोगों को चोपाल में इकट्ठा कर आई पंथ के धार्मिक उपदेश दिये, भजन व साखियां सुनाई। उस समय वहां के लोगों ने उनके उपदेश ध्यान पूर्वक नहीं सुने। इस पर जती भगा बाबाजी ने वहां से प्रस्थान करते समय कहा कि "सथलाणा पत होणा" अर्थात सथलाणा के लोगों में धार्मिक रूचि नहीं है। इस वचन का कुछ धार्मिक लोगों पर इतना असर पड़ा कि वे सथलाणा गांव छोडकर पास में गांव माधुपुरा बसा कर रहने लगे।

संवत् १९०२ में जती भगा बाबाजी ने समस्त मालवा, मिमाड़, गोडवाड़ का दोरा किया और लोगों को धर्म उपदेश दिये। दोरा करने के बाद वापिस बिलाड़े आकर आपने घोषणा की कि मैं जीवित समाधि ले रहा हूं अतः संवत् १९०२ के ज्येष्ठ वदी २ बुधवार को आपने माटमोर के बाग में जीवित समाधि ली। उनके पीछे ९ स्त्री-पुरुष भक्तों ने अपने प्राण छोडे थे जिनमें पांच पुरुष व चार महिलाएं थी। जिनमें ग्राम उदलिया-वास की सीरवी केहरजी हाबड की पुत्री आसीबाई भी थी। जिनका स्मारक हाथ आज भी उदलियावास में हांबड़ों की गवाड़ी में है। इस सम्बन्ध में बडेर बिलाड़ा की पुरानी बहियों में निम्न प्रकार विवरण अंकित है।

"नकल"

"बडेर माहे श्री माताजी रा पुजारी भगोजी सु शिवदान दासजी रो मोसर करनै पछै संवत १९०२ रा जेठ वद २ बुधवार ने जीवत समाध लीवी—तीणा रे लारे इतरा जणा गाडिया—भगोजी पिण्डा—जिणाँ रै साथै (१) सीरवी जगमाल बरफा रा बेटा री बहु, (२) सोरवो खींया हांबड री बहु, (३) सीरवी खींयो हाँबड, (४) सीरवी मासींघ ने, (४) इणां री बहु ने मालवा रा तीन जणा आया जिके, (९) उदलियावास री आसी।

जब मालवा के लोगों को जती भगा बाबाजी की समाधि की खबर मिली तो वे वहां से दर्शनार्थ बिलाड़ा आये। मार्ग में जती भगा बाबाजी ने उन्हें घोड़े पर सवार होकर दर्शन दिए और बातचीत की। बिलाड़ा आने पर मालवा के सीरवियों ने बताया कि जती भगा बाबाजी ने समाधि नहीं ली है, वे तो हमें मार्ग में मिले थे और हमसे बातचीत की थी। यह बात सुन यहां के लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। लोगों ने जतीजी को देवता रूप मानकर उनके समाधि स्थल पर एक चबूतरे का निर्माण करवाया जो आज दिन विद्यमान है। सीरवी समाज में श्रद्धालु भक्त विवाह के समय जती भगा बाबाजी की जात देते हैं और अपने बच्चों का झड़ोला उतारते हैं। यही नहीं यदि किसी को तेज बुखार हो, तो वह जती भगा बाबाजो के नाम की तांती (डोरा) बांधलें तो तुरंत ठीक हो जाता है। होनी चाहिए सच्ची आस्ता। आज भी जती भगा बाबाजी को देवता रूप में पूजते हैं। भगा बाबाजी के समान धर्मात्मा आई भक्त साधु डागरियां बाबों में बहुत कम हुवे हैं। एक बार दिवान प्रतापसिंहजी के एक कृपा पात्र चारण कवि ने बाबा लोगों से निम्न दोहा कहा था—

"भगो बाबो हुवो भलेरो, जती मरद घणां जांण।
उणाहिज ठौड़ आज दिन, हुवे धरम री हांण॥
बाबो रे साची लीजो जाण, थांने आई नाथ री आण॥



जती भगा बाबाजी ने कई साखियां, बेले, भजन, वचनों की रचना की थी जिन्हें लोग आज भी बड़े प्रेम से गाते हैं।

## जती भगा बाबा द्वारा रचित

## मातृ वन्दना

सुरसत माय सारदा ने सिवरूं।
गणपत देव मनाऊंला-मां जरणी ऐ जोगमाया॥ टेर १॥
शरणे आया ने देवी सोरा राखजे,
करजे छत्र वाली छाया॥ मां जरणी २॥
सोना रूपा री देवी ईंट पड़ाऊंला,
थांरो मिन्दरियो चुणवाऊंला॥ मां जरणी ३॥
कूं कूं केसर री गार गलाऊंला,
थारो मिन्दरियो धोलाऊंला॥ मां जरणी ४॥
आडा वला रा बांस कटाऊंला,
थांरो मिन्दरियो छवाऊंला॥ मां जरणी ५॥
दूर देशों रा देवी आवे जातरू,
थांरी इदकी जोत कराऊंला॥ मां जरणी ६॥
माई हिंगलाज का हुआ उजियाला,
मैं बांण गंगा में नहाऊंला॥ मां जरणी ७॥
बीज थावर रो थारे जमो जगाऊंला,
मोतियो चौक पुराऊंला॥ मां जरणी ८॥
सुरे गाय रो घिरत मंगाऊंला,
थांरे दिवलै जोत कराऊंला॥ मां जरणी ९॥
दोय कर जोड़ जती भगो बाबो बोले,
दुरबल होय गुण गाऊंला।
मैं लुल लुल शीश निवाऊंला,
मां जरणी ऐ जोगमाया॥ १०॥

जती भगा बाबाजी को डोराबन्द अपना धर्म गुरू मान कर बहुत आदर करते थे। मालवा के गांव कापसी के एक भक्त सीरवी हेमाजी गहलोत, जती भगा बाबाजी को पूज्य गुरू मानते थे। उन्होंने जती भगा बाबाजी की निसाणी लिखी थी।

## जती भगा बाबाजी की निसाणी

कूड़-कपट नहीं भाखिये, सहनेणों दीठी बात।
निसाणी कहूं भगजी जती री, नै सुणजौ सगलों ही साथ ॥१॥
कोई मत अचरज जाणजो भाइयों, राम करेला सहाय।
संवत्१६०४साल चौके जती भगजी री निसाणी, हेमो दी बणाय॥२॥
मास भाद्रवो बीज उजाली, पो ऊगंते प्रभात।
भगजी विवांणो बैठ चले, ने देखे सगलों ही साथ ॥३॥
जोगी तो भगजी जती, दूजा बांना री लार।
पीर लिछमणदासजी पाट बिराजिया, नै भगजी चढ़िया विवांण॥४॥
गढ़ बिलाड़े हाको हुवो, ने देखण आया दीवाण।
बैकुठों री बावड़ी ने सरगा तणां सहनांण ॥५॥
ढोल नगाड़ा बाजतां, गहरा घुरिया निसाण।
दुनियां लुल लुल पाये पड़े, नै भगजी चढ़िया विवांण ॥६॥
भगो जती तो कुल में कीधी नामना, अमर हुआ कुल मांय।
गढ़ बिलाड़े वासो बसता, न कल्प व्रिख री छांय ॥७॥
श्री दिवाणों री करता चाकरी, देता देवी ने धूप।
बांकेगढ जाय बिराजिया, पांच तंत में रूप ॥८॥
भाग उद्धारण भगो जती, कदेई आवता काबसी गांव।
चेलो कीधो हेमा ने, घणा सिखाया नांव ॥९॥
बांकेगढ री बांता कहता, घणे देता उपदेश।
जद हेमा शब्द सीखिया, बालपणा री बेस ॥१०॥
गुरू गोविन्द रो नाम लेवतां, कटै करम कलेश।
गुरू मुख भगवत भेला रमे, परड़े पड़े मलेच्छ ॥११॥



गुरू मिलिया ने फेरा टलिया, लख चौरासी कट जाय।
गुरू मिलण री इच्छा जागी, तो गुजर निजर नहीं आय ॥१२॥
ऐसी खबर लागी हेमा ने, गुरू बांकेगढ़ जावे।
गुरू मिलण रो कोड घणो, हेमो बिलाड़े आवे ॥१३॥

गढ़ बिलाड़े हाको कियो, "नै" हेमो देख अचम्भे रहियो।
भगजी वचन भाखे ऐसा, नै कालजे करवत पड़े जैसा ॥१४॥

देखी सुणी भगतो री बातां, प्रगट नहीं करूं तो लागे श्राप।
करे नहीं विश्वास माय नै बाप,
भगतों रा वचन राखूं किताक दिन छाने ॥१५॥
करूं भलाई मांने या कोई नहीं मांने।
साध सूती साची जाने, नुगरा कपटी तो कदेई नी माने ॥१६॥
कहे 'हेमो' थे सुणजो रे भाई,
कहियां बिना तो म्हारे सरे नहीं नाई ॥
भगजी रे मेले 'हेमो' चालियो, उमर एकादस रे माय ॥१७॥
भगजी रा वचन प्रगट करू, उमर तिरेसठ रे माय।
भगजी रा दरशण 'हेमो' कीधा, ऊबो गंगा रे घाट ॥१८॥
जातां विवांण सहनैणां दीठा, बांकागढ री बाट।
चलता विवांण भगजी वचन भाखिया,
सो सारा हिरदे कर लीना ॥१९॥
इतरा दिन तो छांने राखिया, ने अबे प्रगट कर दीना।
कोरा कागद हेमो हाथो लीना, नै वचन सारा कंठे कीना ॥२०॥

दूजी भाषा तो हेमो छोड़ दीनी, मुरधर भाषा ने अपणाय लीनी।
भगतों रा वचन भूल मत हेमा, लगे भगतों रो श्राप ॥२१॥
रावण जैसा नर गल गया, ओ करणी रो प्रताप।
भगतों रा वचन कोई भूले तो, कीधी करणी निष्फल जाय ॥२२॥

भगतों रा वचन जिके नर पाले, सो सहजे सरगा जाय ।
भगतों रे वचन भगवत आधीन, समझ कर साची जांण ।।२३।।

होली में प्रहलाद उबारियो, नै मरतौ बचायो प्राण ।
भगतों काज दशरथ घर जलमिया,
निर्गुण स्वरूप सगुण कीधो ।।२४।।

रावण रो वंश निरवंश कीधो, नै राज विभिषण ने दीधो ।
भगतों काज भिक्षा मांगी,
राजा बलि घर ब्राह्मण वेने आया ।।२५।।

दर जोधन रा मेवा त्यागिया, ने साग विदुर घर खाया ।
भगतों रे काज वसुदेव घर जलमिया,
कंस असुर ने संहारियो ।।२६।।

भगतों रे काज मीरा घर आया, नै विष इमरत कर डारियो ।
भगतों रे काज भरियो माहेरो, मूता नरसी घर आया ।।२७।।

झूठा बोर सबरी रा खाया, नै खीच करमा घर खाया ।
भगत माल तो कब लग वरणू, नै कब लग करूं बखाण ।।२८।।

भगत वचन से भगवत ही डरपे, सो साची कर जांण ।
भगती देवण भगजी जती, मुगती दे दीवाण ।।२९।।

भव-भव तारण भगवती, ये तीनों मुगती री खांण ।
सहदेव सरगा वाटड़ो, सूरा सती सोही जाय ।।३०।।

असंख जुगों में अनेक तिरिया, सतजुग में सती नै साध ।
तैता जुग में राजा हरचन्द तिरिया,
ने दुवापुर में पाण्डव जाय ।।३१।।

श्री किशन री संगत सु पाण्डव गलिया हिमाले मांय ।
भगत वचन तो राजा जेठल पालियो, सो सहदेव सरगां जाय।।३२।।



कुलजुग में तो राजा बलचन्द तिरिया,
ने छप्पन पियालो रे मांय ।
सहनेणों तो भगजी जती ओद्धरिया, बांकागढ रे मांय ।।३३।।

संवत् १९०४ री साल ने मास भाद्रवो जांण ।
बीज उजाला चन्द्रावली, नै भगजी री करी पिछाण ।।३४।।

संवत १९५५ में प्रगट कीधा हरीजन, हेमा गुरु भगजी रा नांव ।
गुरु दयाल री मेहर हुई, जिणसूं जपूं देवी रा जाप ।।३५।।

जोगी चाले इण मारगा, अमर हुवे कुल मांय ।
रहे गिगनां ने पवनां भखै, अन्न पाणी नहीं खाय ।।३६।।

निसाणी गुरु ग्यान री, सूरा सती री सवाय ।
बांकागढ री वारता सगली दिवी सुणाय ।।३७।।

पद बताया म्हारे सतगुरु दाता, पल-पल करूं बिचार ।
निसाणी निर्गुण वाणी, ने संतों करो विचार ।।३८।।

खोजियां ने खबर पड़े, अलख सोजिया नफो सवाय ।
सुणियां पाप कटे काया रा, सीखियां बैकुण्ठा जाय ।।३९।।

सोजे खोजे सीखे सुणे, कदेई नहीं नरको जाय ।
सह अमरापुर पावसी, किरोड़ तैतीसा रे मांय ।।४०।।

देश निमाड़ ने गांव काबसी, हेमे लिखी अपणी हाथ ।
बाचे जिण ठाकरां नै घणी जै आईनाथ ।।४१।।

संवत १९५५ री साल माघ मास गुरुवार ।
तिथि तेरस नै पुख नक्षत्र करूं के चन्दा जांण ।।४२।।

# जती भगा बाबाजी पंवार व बाबा मण्डली की वंशावली बडेर, बिलाड़ा

डूंगरगिरीजी (गांव कोटड़ी)
|
(१) रूपगिरीजी, (२) केसरगिरीजी
|
(१) जती मोती बाबा (२) लाला बाबा
|
जती गांगो बाबा
|
(१) जती रामा बाबा (२) नृसिंह बाबा
|
(१) पूरा बाबा (२) जती केसा बाबा (३) सुन्दर बाबा
(४) उदागिरीजी (अगले पृष्ठों पर)
|
गोदा बाबा
|
(१) हेमा बाबा (२) रतना बाबा
|
नरींग बाबा
|
जती भगा बाबाजी पंवार
( जीवित समाधि )



(२) जती केसा बाबा
|
जती लाला बाबा
|
मोटा बाबा
|
जती मना बाबा
|
(१) जती गेना बाबा (२) रूगा बाबा (३) गला बाबा
(४) वना बाबा
|
विरदा बाबा

(१) जती मूला बाबा (२) चेला बाबा (३) टीकम बाबा (अगले पृष्ठ पर)
|
जती नेना बाबा

(१) जती मोती बाबा ( वर्तमान ) (२) ओटा बाबा (३) भीका बाबा
|
(१) जोरा बाबा (२) रामा बाबा
(३) जोगा बाबा
|
(१) हीरा बाबा (२) नरींग बाबा
(३) भोला बाबा

(३) टीकम बाबा
|
डा बाबा
|
(१) सुजाण बाबा (२) खीया बाबा

(१) सुजाण बाबा
|
नाथा बाबा
|
मोटा बाबा

(२) खीया बाबा
|
ग्रासा बाबा
|
लखा बाबा
|
लूम्बा बाबा

※

(३) सुन्दर बाबा
|
वागा बाबा
|
हृदर बाबा
|
लखा बाबा
|
भीया बाबा

(४) उदागिरीजी
|
ईशरजी
|
मेया बाबा (जीवित समाधि)
|
खेता बाबा (जीवित समाधि)
|
(१) वना बाबा (२) माला बाबा

(१) वना बाबा
|
(१) रूगा बाबा (२) रता बाबा

(१) रूगा बाबा
|
हुकमा बाबा
|
(१) लाला बाबा (२) माला बाबा
(३) केसा बाबा (४) हरका बाबा

(२) रता बाबा
|
(१) धना बाबा (२) शोभा बाबा

(१) धना बाबा
|
वेना बाबा
|
भगा बाबा
|
भंवर बाबा

(२) शोभा बाबा
|
घूना बाबा